प्रातः क्लास 12/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी शिवबाबा बैठ अपने रूहानी बच्चों को समझाते हैं। यह तो जानते हो कि तीसरा नेत्र भी होता है। बाप जानते हैं सारी दुनिया के जो सभी आत्माएँ हैं सभी को मैं वर्सा देने आया हूँ। बाप के दिल में तो वर्सा ही होगा ना। लौकिक बाप के दिल में भी वर्सा ही याद होगा। बच्चों को वर्सा देंगे। बच्चा न होगा तो मुँझते हैं किसको वर्सा दें। फिर एडॉप्ट कर देते हैं। यहाँ तो बाप बैठे हैं, इनकी तो सारी दुनिया के जो भी आत्माएँ हैं सभी तरफ नज़र जाती है, जानते हैं सभी को मुझे वर्सा देना है। भल बैठे यहाँ हैं; परन्तु नज़र सारे विश्व पर और सारे विश्व के मनुष्यमात्र पर है; क्योंकि सारे विश्व को ही निहाल करना होता है। बाप समझाते हैं यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। तुम जानते हो बाबा आया हुआ है, सभी को शान्तिधाम-सुखधाम ले जाने। सभी निहाल हो जाने वाले हैं। ड्रामा के प्लैन अनुसार कल्प-2 मिसल निहाल हो जावेंगे। बाप सभी बच्चों को याद करते हैं। नज़र तो जाती है ना। यह भी जानते हैं सभी नहीं पढ़ेंगे। ड्रामा प्लैन अनुसार सभी को वापस जाना है; क्योंकि नाटक पूरा होता है। थोड़ा आगे चलेंगे तो खुद भी समझ जावेंगे। अभी विनाश होता है। अभी नई दुनिया की स्थापना होती है; क्योंकि आत्मा तो फिर भी चैतन्य है ना। तो बुद्धि में यह आ जावेगा, बाप आया हुआ है, पैराडाइज़ स्थापन होगा और हम शान्तिधाम चले जावेंगे। तुम समझते हो जो भी मनुष्यमात्र हैं सभी शांतिधाम जावेंगे। सभी की गति होगी बाकी तुम्हारी सद्गति होगी। अभी बाबा आया हुआ है। अभी पुरुषोत्तम संगमयुग है। हम स्वर्ग में जावेंगे बाकी सभी शांतिधाम चले जावेंगे। जयजयकार हो जावेगा। अभी तो बहुत हाहाकर होनी है। कहाँ ड़कड़ पड़ रही है, कहाँ लड़ाइयाँ चल रही हैं। हज़ारों, लाखों मरते रहते हैं। बच्चे जानते हैं इस तरफ मौत होना है। सतयुग में यह बातें नहीं होती। बाप जानते हैं अभी मैं जाता हूँ, फिर सारे विश्व में जय–जयकार हो जावेगी। मैं भारत में ही जाऊँगा। विश्व में भारत जैसे कि एक गाँव है। बाबा के लिए तो गाँव ठहरा, बहुत थोड़े मनुष्य होंगे। सतयुग में सारे विश्व जैसे एक छोटा गाँव है। अभी तो कितनी वृद्धि हो गई है। बाप की बुद्धि में तो सभी बातें हैं ना। अभी इस शरीर द्वारा बच्चों को समझाते हैं। तुम्हारा पुरुषार्थ वही चलता है जो कल्प-2 चलता है। हरेक आत्मा में सारा पार्ट नुँधा हुआ है। बाप भी इस कल्पवृक्ष का बीजरूप है। यह है कॉरपोरियल झाड़। ऊपर में है इनकॉरपोरियल झाड़। अभी तुम जानते हो यह ड्रामा कैसा बना हुआ है। यह साकारी झाड़, वह निराकारी झाड़। यह समझ और कोई मनुष्य में नहीं है। सारी दुनिया के मनुष्य बेसमझ हैं। बेसमझ का ही राज्य है, तब बाप समझाते हैं यह बेसमझ और समझदारों का फर्क देखो! कहाँ समझदार स्वर्ग में राज्य करते हैं, उनको कहा ही जाता है सच खण्ड, हेविन, स्वर्ग। अभी तुम बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए, बाबा आया हुआ है। यह पुरानी दुनिया तो ज़रूर बदलेंगे, जितना-जितना जो पुरुषार्थ करेंगे। बाप तो पढ़ा रहे हैं। जितना पुरुषार्थ करे। यह तुम्हारा स्कूल तो बहुत वृद्धि को पाते रहेंगे, बहुत हो जावेंगे। सभी का स्कूल इकट्ठा थोड़े ही होगा। इतने रहेंगे कहाँ? तो बाप समझाते हैं यह तो बच्चों को याद है अभी हम जाते हैं सुखधाम। जैसे साधारण बात है कि जब विलायत में जाते हैं तो 8/10 वर्ष जाए रहते हैं ना। फिर आते हैं भारत में। भारत तो गरीब है। विलायत वालों को यहाँ सुख नहीं आ सकता है, वैसे तुम बच्चों को भी यहाँ सुख नहीं है। तुम जानते हो हम बहुत ऊँची पढ़ाई पढ़ रहे हैं, जिससे हम हेविन के मालिक, देवता बनते हैं। वहाँ कितने अथाह सुख होंगे। उस सुख को सभी याद करते हैं। यह गाँव(कलियुग) तो याद भी नहीं आ सकता। इनमें तो अथाह दुख है। इस रावण राज्य में पतित दुनिया में अपरमअपार दुख है। कहाँ फिर अपरमअपार अथाह सुख होगा। हम योगबल से अथाह सुख वाली दुनिया स्थापन कर रहे हैं। यह राजयोग है ना। बाप खुद कहते हैं मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। तो ऐसा बनाने वाले टीचर को याद करना चाहिए ना। टीचर और

पढ़ाई बिगर बैरिस्टर अथवा इंजीनियर थोड़े ही बन सकते हैं। यह फिर है नई बात। आत्माओं को योग लगाना है परमात्मा बाप के साथ, जिससे बहुत समय अलग रहे हैं। बहु(त)काल क्या? वह भी बाप आपे ही समझाते रहते हैं। मनुष्य तो लाखों वर्ष आयु आदि कह देते हैं, बाप कहते नहीं। यह तो हर 5000 वर्ष तुम जो पहले बिछुड़े थे वह फिर बाप से आकर मिलते हो। तुमको ही पुरुषार्थ करना है। मीठे-2 बच्चों को कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं अपन को आत्मा समझो। जीवात्मा है ना। आत्मा अविनाशी है, जीव विनाशी है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है, जो कब पुराना नहीं होता। वण्डर है ना! पढ़ाने वाला भी वण्डरफुल है! किसको भी याद नहीं। भूल जाते हैं। आगे जन्म में क्या पढ़े हैं किसको याद है क्या? इस जन्म में तुम पढ़ते हो रिजल्ट नई दुनिया में मिलनी ही है। यह सिर्फ तुम बच्चों को पता है। यह याद रहना चाहिए अभी यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। हम नई दुनिया में जाने वाले हैं, यह याद रहे तो भी तुमको बाप याद रहेगा। याद की अनेक उपाय बताते हैं। बाप भी, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। तीनों रूपों में याद करो। कितनी युक्तियाँ दी जाती हैं याद करने की; परन्तु माया भुला देती है। बाप जो नई दुनिया स्थापन करते हैं, बाप ने ही बताया है यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। यह याद करो। मैं तुम्हारा बाप, टीचर, सद्गुरु हूँ। ऐसा कोई मनुष्य होता नहीं। फिर भी याद क्यों नहीं कर सकते हो। युक्तियाँ भी बतलाते हैं याद की। फिर साथ-2 कहते भी हैं कि माया बड़ी दुस्तर है। घड़ी-2 तुमको भुलावेगी और देह-अभिमानी बना देगी; इसलिए जितना हो सके याद करते रहें। उठते-बैठते-चलते याद में रहो। देह के बदली अपन को देही समझो। यह है मेहनत। नॉलेज तो बहुत ही सहज है। सभी बच्चे कहते हैं याद ठहरती ही नहीं। तुम बाप को याद करते हो, माया अपने तरफ खैंच लेती है। इस पर ही यह खेल बना हुआ है, तुम भी समझते हो हमारा जो बुद्धियोग बाप के साथ और पढ़ाई के सबजेक्ट्स में होना चाहिए; परन्तु भूल जाते हैं। बाबा तो युक्ति बहुत बताते हैं। भूलना न चाहिए। वास्तव में इन चित्रों की भी दरकार नहीं; परन्तु पढ़ाते समय कुछ तो आगे चाहिए ना। कितने चित्र बनते रहते हैं। पाण्डव गवर्नमेंट की प्लैन देखो कैसी है, कौरव गवर्नमेंट की भी प्लैन है। इनमें तो इंग्लैंड, विलायत आदि कुछ है नहीं। भारत की ही बात है। तुम समझते हो सिर्फ भारत ही था। बड़ा ही छोटा था। सारा भारत विश्व का मालिक था। एवर नथिंग न्यू होती है। दुनिया तो एक ही है। एक्टर्स भी एक ही है। चक्र फिरता जाता है। तुम गिनती करेंगे इतने सेकण्ड, इतने घंटे, इतने दिन, इतने वर्ष पूरे हुए। फिर चक्र फिरता रहेगा। आजकल-आजकल करते ही आते हैं। कल पूरी होगी फिर कहेंगे कल। आज कल करते 5000 वर्ष हुए। सब सीन-सीनरी, खेल-पाल होते आते हैं। कितना बड़ा बेहद का झाड़ है। झाड़ के पत्ते तो गिन नहीं सकते हैं। यह झाड़ है। इनका फाउंडेशन है यह। फिर तीन ट्यूब्स मुख्य निकले हुए हैं। इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन। बाकी झाड़ के पत्ते तो कितने ढेर हैं। कोई की ताकत नहीं जो गिनती कर सके। इस समय सभी धर्मों के झाड़ वृद्धि को पा चुके हैं। यह बेहद का बड़ा झाड़ है। यह सभी धर्म फिर न रहेंगे। अभी सारा झाड़ खड़ा है, बाकी फाउंडेशन है नहीं। बनियन ट्री का मिसाल भी देते हैं। यह एक ही वण्डरफुल झाड़ है। बाप ने दृष्टान्त भी ड्रामा में यह रखा है समझाने लिए। फाउंडेशन है नहीं। बाकी (स)ारा वृद्धि को पाता जाता है। जब नए झाड़ की स्थापना हो जावेगी तो बाकी सभी विनाश हो जावेंगे। तो यह समझ की बात है। बाप ने तुमको कितना समझदार बनाया है। अभी देवी-देवता धर्म का फाउंडेशन है नहीं। बाकी कुछ निशानियाँ हैं। तो बच्चों की बुद्धि में यह सारा ज्ञान आना चाहिए। बाप की भी बुद्धि में यह नॉलेज है ना। तुमको भी आप समान बनाते हैं। तुमको सारा नॉलेज दे रहे हैं। बाप बीजरूप है ना और यह उल्टा झाड़ है। यह चक्र फिरता ही रहता है। गाया भी हुआ है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट। सतयुग से शुरू करेंगे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है। यह बड़ा बेहद का बड़ा ड्रामा है। अभी तुम्हारी बुद्धि बेहद में चली गई है। तुमने बाप को और बाप की रचना को भी जान लिया है। भल शास्त्रों में है ऋषि-मुनि नहीं जानते

थे। अभी तुम जानते हो फिर कल भूल जावेंगे। तुम्हीं जब भूले रहेंगे तो फिर ऋषि-मुनि आदि कैसे जानेंगे। एक भी जानता हो तो परम्परा चले। दरकार ही नहीं, जबकि सद्गति हो जाती है। बीच में कोई वापस तो जा नहीं सकते। वृद्धि को पाते रहते हैं। यह तो गपोड़ा मारते हैं कि फलाना ब्रह्म में लीन हुआ, यह हुआ। वास्तव में वापस कोई जा नहीं सकता। नाटक जब तक पूरा हो तब तक सभी एक्टर्स यहाँ होने हैं। जब तक बाप आते हैं। जब बिल्कुल वहाँ खाली हो जोवगा तब तो शिवबाबा की बारात जावेगी। पहले तो कोई जाकर नहीं बैठेंगे ना। तो बाप यह सारी नॉलेज बैठ देते हैं कि यह वर्ल्ड का चक्र कैसे रिपीट होता है। सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग, फिर संगमयुग होता है। गायन है; परन्तु संगमयुग कब होता है यह किसको भी पता नहीं है। तुम बच्चे समझ गए हो चार युग हैं और पाँचवाँ है यह लीप युग। इनको मिडगेड कहा जाता है। कृष्ण को भी मिडगेड दिखाते हैं ना। तो यह है नॉलेज। नॉलेज को मोर-सोर(मोड़-तोड़) कर भक्ति में क्या बना दिया है। ज्ञान का सारा सूत मुँझा हुआ है। उनको समझाने वाला तो एक ही बाप है। प्राचीन राजयोग सीखने विलायत में जाते हैं। वह तो यह है ना। प्राचीन अर्थात पहला-2। वह सहज राजयोग सिखलाने बाप ही आते हैं। कितने ऐन्शस(ऐंकशियस) रहते हैं। तुम भी ऐन्शस(ऐंकशियस) रहते हो स्वर्ग की स्थापना हो जावे। आत्मा को याद तो आता है ना। बाप कहते हैं यह नॉलेज जो मैं तुमको अभी देता हूँ वह फिर मैं ही आकर दूँगा, और कोई दे न सके। अन्त में तुम्हारी ही विजय होगी। तुम बैठ समझावेंगे कितनी बड़ी भारी भूल कर दी है। एक ही बात पर तुमने विजय पहन ली तो फिर सर्वव्यापी का ज्ञान भी उड़ जावेगा। इसलिए बाप कहते रहते हैं ओपीनियन लिखा लो तो गीता का भगवान कौन है वह भी सिद्ध हो जावेगा। वही सुप्रीम बाप है, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सद्गुरु भी है। उनके लिए सर्वव्यापी कह देना यह तो बड़ी बात हुई ना। कृष्ण के लिए कब ऐसे नहीं लिखा है कि वह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। बाप कितना सहज कर समझाते हैं। फिर भी याद क्यों नहीं पड़ता है। यहाँ बैठे सारा चक्र बुद्धि में आ जावेगा। तुमको बाप ने बताया है, तुमको फिर औरों को बताना है– 5000 वर्ष पहले यह महाराजा-महारानी कैसे राज्य करते थे, कितना समय इन्होंने राजाई की। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। सतयुग से ही गिनेंगे। कैसे यह चक्र फिरता है। कहानी मिसल ही बाप बतलाते हैं। कितना सहज है। तुम भी अभी फील करते हो, है बहुत सहज। कहानी सुनने से, याद करने से मनुष्य विश्व का मालिक बन जाते हैं। कितनी सहज है। बैरिस्टर(ी) पढ़ता होगा तो बैरिस्टर को ही याद करते-2 बैरिस्टर बन जावेंगे। पढ़ाने वाले से ज़रूर योग रखेंगे ना। यह फिर बाप पढ़ाते हैं देवता बनने लिए। यह है नई दुनिया के लिए नया ज्ञान। यह ज्ञान बुद्धि में रहने से खुशी बहुत रहती है। बाकी थोड़ा टाइम है। अभी चलना है। एक तरफ खुशी होती है, दूसरे तरफ फिर ख्याल भी होता है– अरे, ऐसा मीठा बाबा हम फिर कल्प बाद देखेंगे! बाप ही बच्चों को इतना सुख देते हैं ना। बाप आते ही हैं शांतिधाम-सुखधाम ले जाने। तुम शांतिधाम-सुखधाम को याद करो, तो बाप भी याद आवेंगे। इस सारे दुखधाम को भूल जाओ। बेहद का बाप बेहद की बातें सुनाते हैं। पुरानी दुनिया से तुम्हारा ममत्व निकलता जावेगा, तो खुशी भी होगी। तुम रिटर्न जर्नी में फिर सुखधाम जाते हो। सतोप्रधान बनते जावेंगे। कल्प-कल्प जो बने हैं वही बनेंगे और उनको खुशी भी होगी। फिर यह पुराना शरीर छोड़ देंगे। फिर नया शरीर लेकर सतोप्रधान दुनिया में आवेंगे। यह नॉलेज खलास हो जावेगा। बातें तो बहुत सहज हैं। रात को सोने समय ऐसे सिमरण करो, तो बहुत खुशी रहेगी। हम यह बन रहे हैं। सारे दिन में हमने कोई शैतानी तो नहीं की? पाँच विकारों से कोई विकार हमको सताया तो नहीं? लोभ तो नहीं आता? अपने ऊपर जाँच रखनी है।

अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।